ग्रामीण समुदाय – प्रारम्भ में व्यक्ति को खेती करने का ज्ञान नहीं था। वह खाने-पीने की वस्तुएँ जुटाने के लिए इधर उधर भटकता फिरता था। किन्तु धीरे-धीरे उसने खेती करना सीखा। जहाँ उपजाऊ जमीन थी, वहीं पर कुछ लोग स्थायी रूप से बस गए और खेती करने लगे। इस प्रकार कुछ परिवारों के लोगों के एक ही भूखण्ड पर निवास करते, सुख दुख में एक दूसरे का हाथ बटाने और मिलकर प्रकृति से संघर्ष करने से उनमें सामुदायिक भावना का विकास हुआ। इसी से ग्रामीण समुदायों की उत्पत्ति हुई। ग्रामीण समुदाय की परिभाषा देना कठिन कार्य है क्योंकि गाँव की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। फिर भी कुछ विद्वानों ने ग्रामीण समुदाय को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

ग्रामीण समुदाय का अर्थ एवं परिभाषाएँ – सामान्य शब्दों में गाँव एक ऐसा समुदाय है जहाँ अपेक्षाकृत अधिक समानता अनौपचारिकता, प्राथमिक समूहों की प्रधानता, जनसंख्या, का कम घनत्व तथा कृषि व्यवसाय की प्रधानता जैसे प्रमुख विशेषताएँ पाई जाती हैं ग्रामीण परिवार की परिभाषाएँ निम्न प्रकार से दी जा सकती हैं –

पीके – ग्रामीण समुदाय परस्पर सम्बन्धित तथा असम्बन्धित उन व्यक्तियों के समूह हैं जो अकेले परिवार से अधिक विस्तृत एक बहुत बड़े घर का परस्पर निकट स्थित घरों में कभी अनियमित रूप से तथा कभी एक गली में रहता है, तथा मूलतः अनेक कृषि योग्य खेती में सामान्य रूप से कृषि करता है; मैदानी भूमि की आपस में बाट लेता है और आस-पास की बेकार भूमि में पशु चराता है जिस पर निकटवर्ती समुदायों की सीमाओं तक वह समुदाय अपने अधिकारों का दावा करता है।

सेन्डरसन के अनुसार – एक ग्रामीण समुदाय वह स्थानीय क्षेत्र है जिसमें वहाँ निवास करने वाले लोगों की सामाजिक अन्तक्रिया और उनकी संस्थाएँ सम्मिलित हैं जिनमें वह खेती के चारों तरफ बिखरी झोपड़ियों या ग्रामों में रहता है और जो उनकी सामान्य गतिविधियों का केन्द्र है।"

मैकिवर एवं एल्ड्रग के अनुसार – ग्रामीण समुदाय के अन्तर्गत संस्थाओं एवं व्यक्तियों का समावेश होता है जो एक छोटे से केन्द्र के चारों ओर संगठित होते हैं तथा सामान्य प्राथमिक हितों द्वारा आपस में बँधे रहते हैं"

अतः ग्रामीण समुदाय का एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र होता है। इसी में व्यक्ति निवास करते हैं। उनका मुख्य पेशा कृषि होता है। समुदाय में उनका सामान्य जीवन व्यतीत होता है, ग्रामीण समुदाय में सामुदायिक भावना पाई जाती है।

ग्रामीण समुदाय की विशेषताएँ –

प्रकृति से जुड़े होने के कारण ग्रामीण समुदाय का स्वाभाविक विकास हुआ है और इसलिए इसकी अपनी कुछ विशेषताएँ हैं - जिनका सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है

(1) कृषि प्रमुख व्यवसाय :– कृषि व्यवसाय ग्रामीण समुदाय की प्रमुख विशेषता है क्योंकि ग्रामीण समुदाय की अधिकांश जनसंख्या इसी व्यवसाय पर निर्भर है। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि गाँव में रहने वाले सभी व्यक्ति कृषि पर ही आश्रित हैं अपितु अन्य व्यवसाय करने वाले लोग (बढ़ई, जुलाहे, लोहार इत्यादि) भी गाँव में रहते हैं परन्तु वे सब कृषि से सम्बन्धित कार्यों को ही अधिकतर करते हैं। इस समय भारत की कुल जनसंख्या का 68.8 प्रतिशत भाग गाँवों में रहता है जो कि अधिकांशतः खेती करता है।

(2) प्रकृति से प्रत्यक्ष सम्बन्ध – ग्रामीण समुदाय में सदस्यों का प्रकृति से सीधा सम्पर्क रहता है। गाँव में कृषि व्यवसाय होने के कारण ग्रामीण व्यक्तियों का जीवन भी प्राकृतिक हो जाता है क्योंकि खुले खेतों में तथा प्राकृतिक दशाओं में उन्हें कार्य करना पड़ता है। इसलिए ग्रामीण लोग स्वच्छ वातावरण में रहते हैं एवम् खुले खेतों से सम्बन्धित सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

(3) सीमित आकार – ग्रामीण समुदाय का आकार सीमित होता है जिसके कारण सदस्य प्रत्यक्ष, अनौपचारिक व सहज सम्बन्ध पाए जाते हैं। प्राथमिक सम्बन्ध ग्रामीण समुदाय के व्यक्तियों में प्रमुख विशेषता है।

सम्बन्ध जीवे तथा व्यक्तिगत होते हैं, तथा कृषि व्यवसाय के कारण, जिसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता होती है, सदस्यों में परस्पर सहयोग पाया जाता है, सम्बन्धों में सम्पूर्णता पाई जाती है तथा सम्बन्ध स्वयं साध्य होते हैं।

(4) जनसंख्या का कम घनत्व – ग्रामीण समुदाय में क्षेत्र तो खेती के कारण विस्तृत है परन्तु सदस्यों की जनसंख्या सीमित होने के कारण जनसंख्या का घनत्व बहुत कम होता है। सदस्य अपने खेतों के पास ही रहते हैं, इस प्रकार ग्रामीण जीवन नगरों के भीड़ भाड़ वाले व्यस्त जीवन से पूर्णतः अलग है।

(5) सजातीयता – ग्रामीण समुदाय के व्यक्तियों में सजातीयता पाई जाती है। सदस्यों की जीवन-पद्धति, रहन-सहन, खान-पान रीति-रिवाज धार्मिक विचार तथा सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहार लगभग एक जैसे हैं। इस कारण सदस्यों में एक व्यवसाय तथा पहलुओं में एकरूपता होने से भिन्नता का ग्रामीण समुदाय में कोई स्थान नहीं है। परन्तु बढ़ते हुए नगरीकरण तथा औद्योगीकरण से आज ग्रामीण समुदायों में भी विजातीयता आती जा रही है।

(6) सामाजिक गतिशीलता का अभाव – ग्रामीण समुदायों में सामाजिक गतिशीलता न के बराबर है। बच्चे पिता का परम्परागत व्यवसाय अपना लेते हैं तथा रहन-सहन एवं विचार एक जैसे होने के कारण सामाजिक गतिशीलता की सम्भावना भी अधिक नहीं है। ग्रामीण समुदायों में विभिन्न वर्गों एवं व्यवसायों में भिन्नता बहुत कम पाई जाती है। शिक्षा कम होने के कारण भी गतिशीलता अधिक नहीं पाई जाती है।

(7) धार्मिक विचारों में प्रधानता – ग्रामीण समुदाय में व्यक्ति धर्म में अधिक विश्वास करते हैं तथा अधिकतर कार्य विश्वासों के अनुसार ही होते हैं। परम्पराओं तथा प्रथाओं की प्रधानता होती है तथा रूढ़िवादिता अधिक पाई जाती है। परम्पराओं तथा प्रथाओं की प्रधानता होती है तथा रूढ़िवादिता अधिक पाई जाती है। गाँव में विभिन्न पारिवारिक, जातीय तथा अन्य सामूहिक देवी-देवताओं की पूजा की जाती है।

(8) सामाजिक विभिन्नीकरण तथा सामाजिक स्तरीकरण –
यद्यपि ग्रामीण समुदायों में आयु तथा लिंग के आधार पर इतना महत्वपूर्ण विभिन्नीकरण नहीं पाया जाता

Scanned by TapScanner

फिर भी स्तरीकरण प्रमुख रूप से गतिशील ही है। जाति व्यवस्था ग्रामीण समाज में अभी भी सुदृढ़ है तथा उच्च जातियों द्वारा अनेक निषेधों का पालन किया जाता है। पहले परम्परागत रूप में गाँव में रहने वाली विभिन्न जातियों में सेवाओं के विनिमय की व्यवस्था पाई जाती थी; जिसे जजमानी व्यवस्था कहा जाता है परन्तु आधुनिक युग में जजमानी प्रथा प्राय समाप्त सी हो गई है।

(9) सामाजिक एकता – व्यवसाय, रीति-रिवाज रहन-सहन, खान-पान तथा सामाजिक जीवन एक जैसा होने के कारण जो एकता पाई जाती है, उसे यान्त्रिक एकता कहकर पुकारा जाता है।

(10) प्राथमिक सम्बन्धों की प्रधानता – सीमित आकार तथा प्रत्यक्ष सम्बन्ध होने के कारण ग्रामवासियों में अनौपचारिक सम्बन्ध पाए जाते हैं। प्राथमिक समूहों जैसे, परिवार, पड़ोस, क्रीड़ा समूह इत्यादि की प्रधानता पाई जाती है तथा इन सम्बन्धों में किसी भी तरह की औपचारिकता अथवा कृत्रिमता नहीं पाई जाती है।

From-
Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
SASARAM.

Scanned by TapScanner